International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 03(I), July - September, 2023, pp. 83-87

ग्रामीण स्त्रियों की उद्यम एवं व्यावसायिक जोखिम प्रबंधन में 'SHG' की भूमिका (धमतरी जिले के विशेष संदर्भ में)

डॉ. सुमीत अग्रवाल*
कामिनी सिन्हा**

सार

व्यवसाय एवं उद्योग प्रत्येक मानव की आवश्यकता है जिसके अभाव में व्यक्ति एवं समाज का विकास संभव नहीं है। अर्थव्यवस्था का विकास व्यावसायकि विकास पर निर्भर करता है। ऐतिहासिक रूप से देखे तो जिस क्षेत्र में उद्योग एवं व्यापार व्यवसाय सफल रहे है ऐसे क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था आज भी अग्रणी स्थान पर है। अतः औद्योगिक विकास प्रत्येक अर्थव्यवस्था की प्रथम आवश्यकता है, किन्तु व्यवसाय का संचालन सरल नहीं है इसमें अनेक बाधाएँ एवं चुनौतियाँ भी होती है जो औद्योगिक विकास में रूकावटे उत्पन्न करती है। स्त्री एवं पुरूश दोनों से ही मानव जाति की जनसंख्या बनी हुई है अतः औद्योगिक विकास जितना पुरूशों का दायित्व है उतनी ही महिलाओं की भागिता भी होनी चाहिए। ताकि उनका मिला जुला प्रयास औद्योगिक विकास की गति को तीव्रता प्रदान कर सके। इसी प्रयास में महिला स्वसहायता समूह एक महत्वपूर्ण साधन है जिसके द्वारा महिलाएँ अपनी भागीदारी इस क्षेत्र में दे सकती है। उक्त शोध अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के धमतरी जिला में ग्रामीण स्त्रियों की उद्यम एवं व्यावसायिक अवसर तथा चुनौतियों में SHG की भूमिका के संदर्भ में किया गया है। जिससे ज्ञात हो सके की व्यावसायिक उद्यम के विकास एवं बाधाओं को दूर करने में SHG किस प्रकार सहयोग प्रदान कर रहा है तथा इसमें व्यावसायिक सफलता की कौन–कौन सी संभावनाएँ निहित है।

शब्दकोशः *स्व–सहायता समूह, औद्योगिक विकास, व्यावसायिक अवसर एवं चुनौतियाँ, जोखिम निवारण कोश।*

प्रस्तावना

आधुनिक अर्थव्यवस्था में उद्योगो को विशेश स्थान प्राप्त है अर्थव्यवस्था के विकास में उद्योग का स्थान सर्वोच्च है। व्यावसायिक प्रगति के कारण ही किसी राश्ट्र को विश्व के अन्य देशो का धन प्राप्त होता है जिससे देश का आर्थिक विकास जुड़ा हुआ है, किन्तु किसी देश में आर्थिक विकास की समस्या सबसे महत्वपूर्ण समस्या है। जब किसी क्षेत्र का मुद्रा एवं पूँजी के द्वारा विकास किया जाता है तो यह आर्थिक

* निर्देशक एवं सहायक प्राध्यापक उच्च शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ़ शासन।
** शोधार्थी, कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई, छत्तीसगढ।

विकास की श्रेणी में आता है आर्थिक प्रगति एक व्यापक शब्द है जिसमें देश की राश्ट्रीय आय में वृद्धि, निर्धनता में कमी एवं व्यक्तियों के उपभोग स्तर में वृद्धि को शामिल किया जाता है। अपनी आर्थिक अवश्यकताओं की पूर्ति हेतु व्यक्ति विभिन्न आर्थिक क्रियाएँ करता है जैसे मजदूरी, नौकरी, व्यवसाय, लघु एवं वृहद उद्योग, पेशा, कृशि कार्य, पशु पालन इत्यादि। इन कार्यो के लिए व्यक्ति यदि अन्य व्यक्तियों या संस्थाओं पर आश्रित हो तो वह रोजगार की श्रेणी में आता है किन्तु जब व्यक्ति स्वयं व्यवसाय प्रारंभ कर उनमें व्याप्त जोखिमों एवं अनिश्चिताओं को वहन करता है तथा होने वाले लाभ का अधिकारी होता है तो यह स्वरोजगार अर्थात उद्यम एवं व्यवसाय की श्रेणी में आता है। स्वरोजगार की दिशा में प्रशासन द्वारा सामान्य जनता हेतु विभिन्न सहयोग प्रदान किया जा रहा है जिसमें महिलाओं के लिए स्व–सहायता समूह एक महत्वपूर्ण विकल्प है इसके द्वारा व्यावसायिक अवसरों में वृद्धि एवं जोखिमो को कम करने में महिलाओं को विशेश सहायता प्राप्त हो रही है।

अध्ययन का उद्देश्य

- SHG द्वारा व्यावसायिक अवसरो का अध्ययन करना।
- व्यावसायिक चुनौतियों एवं बाधाओं में SHG की भूमिका का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

H_0 – SHG का व्यावसायिक अवसर एवं चुनौतियों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

H^1 – SHG का व्यावसायिक अवसर एवं चुनौतियों पर प्रभाव पड़ा है।

अध्ययन क्षेत्र – जिला धमतरी, विकासखण्ड – धमतरी, कुरूद, मगरलोड, नगरी छत्तीसगढ

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक समंको के आधार पर किया गया है जिसमें प्राथमिक समंक के अंतर्गत़ जिले की SHG में शामिल स्त्रियों से समंक प्राप्त किए गए है तथा द्वितीयक समंक के रूप में जिला मिशन प्रबंधन इकाई, धमतरी से प्राप्त समंको का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श इकाईयों की संख्या स्व–सहायता समूह की 400 स्त्रियाँ है, तथा अंकात्मक एवं प्रतिशत मानो का विशलेशण कर निश्कर्श प्राप्त किया गया है।

स्व–सहायता समूह

स्व–सहायता समूह ग्रामीण आधारित वित्तीय मध्यस्थता समूह है, जिसमें सामान्य रूप से 10–15 स्थानीय महिलाएँ सदस्य के रूप में जुड़ी होती है। यह स्वयं की सहायता करने की अवधारणा पर आधारित एक समूह है जो नारी सशक्तिकरण के क्षेत्र में प्रमुख स्थान रखता है। स्व–सहायता समूह में गरीब स्त्रियाँ एक समूह के रूप में संगठित होकर अपनी छोटी–छोटी बचत की राशि से कोश का निर्माण करती है, जिसका उपयोग आजीविका संर्वधन हेतु करते है। ये समूह निर्धन महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में विश्वसनीय स्थान रखता है।

SHG द्वारा रोजगार एवं व्यावसायिक अवसर

स्वरोजगार आजीविका का एक अच्छा विकल्प है।ैभ्ळ का प्रधान उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार निर्मित कर आजीविका संवर्धन करना है।ैभ्ळ के द्वारा समूह की स्त्रियों को व्यावसायिक कार्यो के लिए प्रेरित किया जा रहा हैं। योजना अपने प्रयास से इस दिशा में आगे भी बढ़ रही है। जिला में आज अधिक संख्या में समूह की महिलाएँ एक–दूसरे के सहयोग से स्वरोजगार द्वारा अपने आय को सुनिश्चित कर रही है, जिसमेंैभ्ळ काफी मद्दगार साबित हो रहा है।

SHG द्वारा विभिन्न व्यावसायिक गतिविधियाँ

चार्ट 1: महिला स्व–सहायता समूह एवं स्वरोजगार/रोजगार

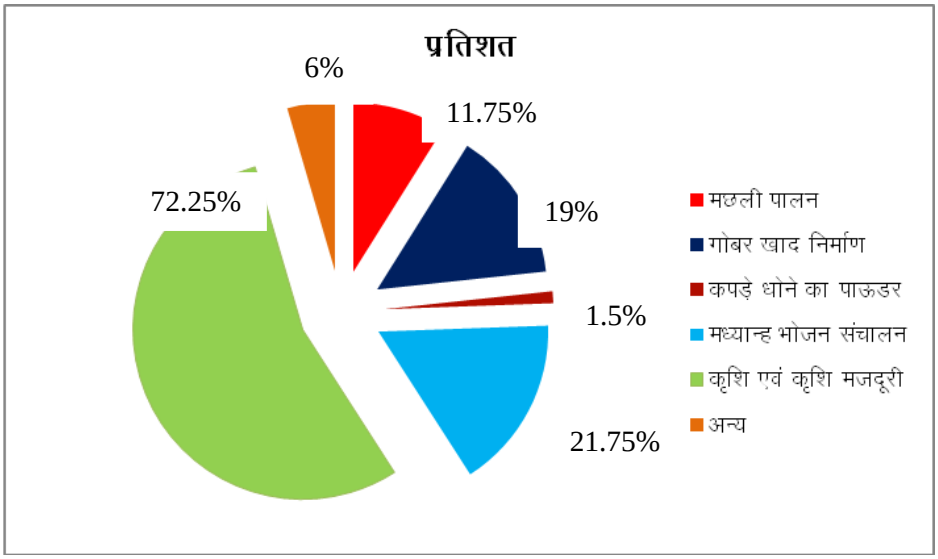

उपरोक्त चार्ट से स्पष्ट है कि बिहान योजना के माध्यम से समूह की महिलाएँ विभिन्न रोजगार/स्वरोजगार में लगी हुई है। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि 11.75: महिलाएँ मछली पालन के कार्य में, 19: महिलाएँ गोबर खाद निर्माण में, 21.75: महिलाएँ मध्याहन भोजन संचालन में तथा 6: महिलाएँ अन्य छोटे–छोटे स्वरोजगार में सलंग्न है, इसके अतिरिक्त 72: महिलाएँ कृशि एवं कृशि–मजदूरी कार्यो में भी लगी हुई हैं, जिसमें स्वरोजगारी महिलाएँ भी शामिल है। अतः स्पष्ट है कि SHG द्वारा अधिकांश निदर्श महिलाएँ विभिन्न रोजगार एवं व्यावसायिक कार्यो में लगी हुई है।

व्यावसायिक चुनौतियों एवं जोखिम प्रबंधन में SHG की भूमिका

प्रस्तुत चार्ट क्रमांक 1 से स्पश्ट है कि SHG द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में व्यावसायिक क्रियाकलापों में बढ़ोतरी हुई है इसका एक प्रमुख कारण ैभ्ळ द्वारा व्यावसायिक जोखिमो को कम करने के प्रयत्न भी शामिल है। ैभ्ळ द्वारा जिला में व्यावसायिक गतिविधियों के लए न्यूनतम ब्याज दर पर बैंक ऋण एवं ब्याज रहित जोखिम निवारण कोश प्रदान किए जा रहे है जो व्यवसाय के सफल संचालन में महिलाओं की सहायता कर ग्रामीण उद्यम को बढ़ावा देने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहा है।

जिले में बैंक ऋण की स्थिति

तालिका 2: जिले में कुल बैंक लिंकेज वितरित प्रकरण की स्थिति 2021 – 22 तक

क्रमांक	विकासखण्ड/जिला	स्व–सहायता समूह की संख्या	बैंक लिकेंज राशि (लाख में)
1.	कुरूद	2815	3735.86
2.	धमतरी	1716	1823.52
3.	मगरलोड	1586	1536.51
4.	नगरी	7562	8460.11
5.	जिला धमतरी	13779	15556

स्रोत – जिला मिशन प्रबंधन इकाई धमतरी

तालिका से ज्ञात हो रहा है कि जिला का नगरी विकासखंड सर्वाधिक बैंक ऋण प्राप्तकर्ता विकासखंड है जो 8460.11 लाख है। जिला मुख्यालय धमतरी से दूरस्थ एवं जनजाति बाहुल्य होने के कारण इस क्षेत्र में समूहों द्वारा स्थानीय उद्योग विकसित करने की अधिक संभावनाएं हैं, परिणाम स्वरूप यह विकासखंड सबसे अधिक बैंक

लिकेंज प्राप्त करने वाला विकासखंड बन गया है। वंही मगरलोड सबसे कब बैंक लिकेंज प्राप्त करने वाला विकासखंड है जो तुलनात्मक रूप से इस क्षेत्र की स्त्रियों में सामूहिक कार्य की निश्क्रियता को प्रदर्शित कर रहा है। विकासखंड कुरूद की स्थिति सन्तोशजनक है, जहां स्त्रियाँ सामूहिक कार्य के प्रति अपनी रूझान एवं साहसिक क्षमता का परिचय दे रही है। धमतरी विकासखंड की स्थिति भी सामान्य है यहां 1716 स्व–सहायता समूह ने 1823. 52 लाख रूपये प्राप्त किये है। तुलनात्मक रूप से चारो विकासखण्ड में बैंक लिंकेज की स्थिति नगरी में सर्वाधिक उन्नतिशील प्रतीक हो रहा है, जो विकासखण्ड को आर्थिक प्रगति की दिशा में प्रेशित कर रहा है। अतः SHG द्वारा ये बैंक ऋण व्यावसायिक उपक्रमों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्राप्त किए गए है।

जोखिम निवारण कोश

समूहो की विपरित स्थिति में इस योजना के द्वारा बैंक ऋण के अतिरिक्त एक और सहायता राशि प्रदान की जाती है जिसे जोखिम निवारण निधि या आपदा प्रबंधन निधि के नाम से जाना जाता है। यह एक ऐसा कोश है जो स्त्रियों की स्थानीय आवश्यकताओं जैसे खाद्यय समस्या, अस्वस्थ्यता, विपरित आर्थिक स्थिति, व्यावसायिक जोखिम इत्यादि कार्य हेतु समूह की प्रत्येक महिला को प्रदान किया जाता है। यह राशि महिलाओं को निर्धारित शर्तो के प्रतिपादन पर प्रदान की जाती है इस सहायता राशि के कारण स्त्रियों को साहूकारो से ऋण लेने की आवश्यकता नहीं होती यह राशि अनुसूचित जाति एवं जनजाति हेतु 2250 रू. एवं अन्य सामान्य सदस्यों के लिए 1500 रू. आरक्षित है यह प्रत्येक ैभ्ळ के सदस्य के लिए है जो ग्राम संगठन से जुड़ा हो। यह राशि ब्याज रहित होती है अर्थात यह एक अनुदान के समान है। व्यावसायिक जोखिम प्रबंधन में ैछळ की भूमिका को प्रस्तुत तालिका द्वारा स्पश्ट किया जा रहा है।

तालिका 2: जोखिम निवारण निधि प्राप्त स्व–सहायता समूह की संख्या

वर्ष	जोखिम निवारण निधि प्राप्त SHG संख्या				
	धमतरी	कुरूद	मगरलोड	नगरी	कुल
2017–18	06	47	07	23	83
2018–19	00	05	04	04	13
2019–20	04	02	04	04	14
2020–21	05	05	05	05	20
2021–22	06	08	06	05	25

स्रोत – जिला मिशन प्रबंधन इकाई धमतरी

तालिका से स्पष्ट है कि विभिन्न समूहों को बैंक ऋण के अतिरिक्त यह आपदा प्रबंधन निधि प्राप्त हुई है हालांकि जिले में कम संख्या में महिलाओं ने यह निधि प्राप्त किया है किन्तु आवश्यकता होने पर वे निश्चित ही यह राशि प्राप्त कर सकती है जो व्यावसायिक जोखिम में उनकी सहायता करेंगी। बैंक ऋण के रूप में साधारणतः अधिकांश समूहो ने राशि प्राप्त किया है इस कारण महिलाओं को इस जोखिम प्रबंधन राशि की आवश्यकता कम हुई है किन्तु किसी भी विपरित परिस्थिति में यह कोश महिलाओं के लिए 24 घंटे उपस्थित है।

निष्कर्ष

SHG द्वारा बैंक ऋण एवं जोखिम निवारण कोश का प्रयोग कर अधिकांश महिलाएँ व्यावसायिक जोखिम प्रबंधन में सफल हो रही है। SHG ने व्यवसाय एवं निवेश के क्षेत्र में महिलाओं की अधिकतम सहायता की है जहाँ एक ओर व्यावसायिक अवसर प्रदान कर रही है वहीं उन व्यवसायों के लिए पूँजी प्रबंध भी कर रहा है जो जिला में आर्थिक गतिविधियों को तीव्रता प्रदान कर रहा है। पूर्व में जो स्त्रियाँ बेरोजगारी के रूप में जीवन यापन कर रही थी वे भी SHG के प्रभाव से व्यावसायिक क्षेत्र में आगे बढ़ी है, परिणाम स्वरूप जिला की 60: महिलाएँ रोजगार प्राप्त कर सकी है जिसमें SHG की भूमिका अत्यंत सराहनीय है। व्यावसायिक पूँजी प्रबंधन के साथ–साथ जोखिम प्रबंधन कोश इस योजना की महत्वपूर्ण विशेशता है जिसने जिला में व्यावसायिक कार्यो की सफलता को आधार प्रदान किया है।

संदर्भ ग्रथ सूची

1. Dr. K. Jayasree (2016) performance of rural women in self employment programme ; A study in nalgonda district – international journal of applied research ; 2(10), 583-588
2. Manidipa Das Gupta (2017) National Rural Livelihood Misson And Sustainable Livelihood Development Through Poverty Alleviation International Journal Of Multidisciplinary , Vol- 02 Issue -9
3. Dr. B. Yasodha Jagadeeswari (2014) Is SHG Empowering Women In Trichy District? An Empirical Study, International Journal Of Management And Social Science Research Review Vol. 1, Issue 6,Page 01
4. Bhumika Bori (2014) Impact Of Swarnajayanti Gram Swarozhgar Yojana On Poverty Alleviation In Golaghat District Assam, IOSR Journal Of Humanities And Social Scince Vol 19, Issue, 9, pp 53-56
5. Prof. Nandini R, (2014) A Study On Women Empowerment Through Sele Help Groups- With Special Reference To Ramanagar District Karnataka , BISM International Journal OF Social Science Research, 9,
6. M. Saravanan (2016) The Impact Of Sefe Help Groups On The Socio – Economic Development Of Rurul Household Woman In Tamilnadu a Study International Journal Of Research - Granthaalayah, Vol 4, Issue -07
7. S. Thangamani (2013) A Study On Women Empowerment Throug Self Help Groups With Special Reference To Mettupalayan Taluk In Coimbatore District, IOSR Journal Of Business And Management Vol-08. Issue -06 Pp 17-24
8. Priyanka Diwan (2017) – Knowledge of national rural livelihood mission among rural women of Udaipur district .
9. Dr. Qasba (2016) Socid – Economic Empowerment of rural SHG approach vol-03, issue 05, PP. 1505 – 1509.
10. S.K. Garg (2012) Jmpact of swarnajayanti gram swarozgar yojna on Poverty alleviation in morar Block of Gwalior District.
11. Audil Rashid Khaki (2016) Financial Jnclusion : Does difference Matter A Case Study of NRLM (SGSY) Beneficiaries in Kashmir.
12. Meena Sakhalkar (2015) Role of Swarnjayanti Gram Swarojgar Yojna in Empowering Women in Household Secisions Issn 2249-9598 Vol-V, Issue, 1.
13. Kiran Rana (2017) Self Help Group & Women Empowerment A Stdy on Some Selected SHGS In Dehardun District Vol -05, Issue 12.
14. Dr. Saneeb Kumar Jena (2012) Emancipation Through Participation a Study of Womens Empowerment Through SHGS in Rayagada District of Odisha.
15. Jatin Pandey (2012) A Study On Empowerment of Rural Women through Self help group Val 01. Isse 08 , ISSN 2277-1166

❖◆❖